श्राद्ध महत्त्व एवं कर्म प्रक्रिया

रमाशंकर गौड़

भारतीय संस्कृति पुनर्जन्म एवं कर्म सिद्धान्त पर आधारित है। प्रत्येक व्यक्ति को जन्म से मृत्यु तक अपने कर्त्तव्य धर्माचरण एवं अन्य कर्म सावधानी पूर्वक, तत्परता से करने होते हैं। हमारे वेदों में शास्त्रों में सम्पूर्ण क्रियाकलापों का विवेचन कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य, धर्म-अधर्म के अनुक्रम में विधि - विधान पूर्वक दिया हुआ है।

श्रीमद् भगवद् गीता में वासुदेव कृष्ण कहते हैं-

सर्वकर्मणा तमभ्यर्च्य सिद्धिम् विन्दति मानवः।

अतः परमधर्म और परम कर्त्तव्य मनुष्य के लिए नैमित्तिक-नित्य कर्म है। प्रत्येक मनुष्य पर तीन प्रकार के ऋणों का उल्लेख किया गया है, वे हैं

1. देव ऋण, 2. पितृ ऋण एवं 3. मनुष्य (ऋषि) ऋण

मानव जीवन विकास की एक अविछिन्न परम्परा सतत चली आ रही है। पिता से पुत्र, पुत्र से पुत्र (पौत्र), पुत्र के पुत्र के पुत्र (प्रपौत्र) और इसी प्रकार यह श्रृंखला निरन्तर चली आ रही है अर्थात् हम जो आज विद्यमान हैं वह पूर्वजों की देन हैं, अतः उनका आधार प्रदर्शन भी अनिवार्य हो जाता है। नित्य कर्म से पूर्वोक्त ऋणों से ऊऋण हुआ जा सकता हैः-

यत्कृत्वानृण्यमाप्नोति देवात् पैत्र्याच्य मानुषात्।

वैदिक संस्कृति-सनातन हिन्दू धर्म में आश्विन मास जिसे क्वार मास भी कहा जाता है में हमारी पुरानी पीढ़ी, जिन्होंने हमें जन्म के अतिरिक्त संस्कार, वेशभूषा, आचार-विचार दिये, से उऋण होने के लिए श्राद्ध पक्ष का विधान होता है।

वैज्ञानिक मान्यता है इस पृथ्वी पर मनुष्य का अस्तित्व लगभग दो करोड़ वर्ष पूर्व का है। आधुनिक देववाद सिद्धान्त से पूर्व प्रारंभिक मानव ने दृष्वा प्रकृति के अनुभव से सूर्य, चन्द्रमा, आकाश, वायु, अग्नि नक्षत्र (तारे) आदि में देवत्व को स्वीकार किया। वेदों में इनकी प्रसंशा और स्तुति की गई है।

शत-दिन, ऋतु परिर्वतन के समय को परिधि में बाँधने के लिए कालचक्र की संरचना की। पल, निमिष, क्षण, पहर, घण्टे, रात दिन, मास और वर्ष का विभाजन, छोटी से छोटी और बड़ी से बड़ी इकाई में ऋतु काल का विभाजन किया एवं दिन का (सोम से रवि तक) बार एवं वर्ष को (चैत्र वैशाख से माघ फाल्गुन) मास से नामांकित किया। चन्द्रमा के घटने बढ़ने, अन्धकार और प्रकाश के क्रमान्तर को शुक्ल (प्रकाशित) कृष्ण (अन्धेर) और तिथियों में नामित किया। चन्द्रमा से पृथ्वी की कम दूरी को दृष्टिगत करते हुए आश्विन मास के कृष्ण पक्ष को पितृ कार्य हेतु चुना है।

पितृ श्राद्ध के लिए भाद्रपद पूर्णिमा से प्रारम्भ करके आश्विन कृष्ण पक्ष प्रतिपदा से आरम्भ करके अमावस्या तक 16 दिन तक श्राद्ध करने का विधान है क्योंकि मनुष्य का शरीरान्त इनमें से ही किसी तिथि के दिन ही होता है। यहाँ यह भी स्मरणीय है कि वह तिथि शरीरान्त के दिन ही मानी जायेगी न कि शरीर के निष्पादन की तिथि से (कहीं कहीं यह प्रथा भी है मगर इसके पीछे रूढ़िगत विचार ही हैं किसी व्यक्ति की मृत्योपरान्त अन्यान्य कारणों से अन्त्येष्ठि यदि 10-15 दिन उपरान्त हो तो) अस्तु, इस पक्ष के अतिरिक्त पितरो के देहान्तोरान्त के दिन भी किया जाना अपेक्षित होता है।

पौराणिक और शास्त्रकारों में पितृ पक्ष के निमित्त विधि-विधान का निर्देशन किया है जो हमारे शास्त्रज्ञान के अभाव में रहस्यमय होता चला गया है। मात्र ब्राह्मण भोजन को ही इस कार्य का अन्तिम ध्येय मान लिया गया है। इस वितण्डावाद से बचने एवं शास्त्रज्ञान प्रबोधन के लिए संक्षिप्त रूप से इस कर्म काण्ड का स्वरूप प्रस्तुत करने का यत्किंचित प्रयास किया गया है।

ऋण उऋण व पितृ पक्ष के विधानानुसार प्रतिदिन तर्पण कर्म किया जाना अपेक्षित है किन्तु व्यावहारिकता में ऐसा कर पाना अपेक्षित नहीं है, इसी प्रकार प्रत्येक मास की अमावस्या पितृ कार्य हेतु अंकित की गई हैं इस दिन जल स्थान (परण्डे) पर स्वास्तिक अंकित कर मिष्ठान युक्त भोज सामग्री व दीप प्रज्जवल किया जाना चाहिए।

श्राद्ध दिवसों में, जिन्हें कनागत नाम से भी उद्बोधित किया जाता है प्रतिदिन श्राद्ध कर्म करना चाहिए क्योंकि

किसी न किसी पूर्वज की मृत्यु इन तिथियों में हुई ही होगी। इसके सरल उपाय के रूप में प्रतिदिन पहली दो रोटी गाय के लिए निकाल कर गुड़ आदि के साथ पितरों को प्रणाम करके श्रद्धापूर्वक गाय को पहले पहल खिला देनी चाहिए।

श्राद्ध करने का अधिकारी कौन ? माता-पिता का श्राद्ध मुख्य रूप से पुत्र को ही करना चाहिए। मृत्युपरान्त अन्त्येष्टि से एकादश-द्वादस तक की क्रियाएँ ज्येष्ठ पुत्र ही करता है। विशेष परिस्थितियों में छोटा भाई भी कर सकता है। संयुक्त परिवार में ज्येष्ठ पुत्र के द्वारा वार्षिक श्राद्ध एक स्थान पर ही सम्पन्न किया जा सकता है, यदि पुत्र अलग-अलग रह रहे हों या पृथक-पृथक रसोई हो तो उन्हें पृथक पृथक सभी को श्राद्ध करना चाहिए। विष्णु पुराण में श्राद्ध के निमित्त पुत्र, पौत्र, प्रपोत्र, भाई, भतिजा, सपिण्ड संतारी में उत्पन्न पुरुष योग्य माने गये हैं। इनके अभाव में क्रमशः समानोदक की संतति, मातृपक्ष सपिण्ड या समानोदक और नितान्त शेष रहने पर स्त्री भी यह कार्य कर सकते हैं। श्राद्धाधिकारी के अभाव में मित्र अथवा राजा (शासक) और्ध्वदोहिक क्रिया कराने हेतु मान्य माने गये हैं । जिस पितर की मृत्यु तिथि ज्ञात न हो उसके निमित्त अमावस्या (सर्व पितृ) को श्राद्ध का विधान है।

श्राद्धकर्ता को एक दिन पूर्व उपयुक्त ब्राह्मण / ब्राह्मणों (पाँच या अधिक आज कल एक प्रचलन है) को निमन्त्रित करें। ऐसा ब्राह्मण लंगड़ा, काना, दाता का दास, अंगहीन अथवा अधिक अंग वाला न हो । ऐसे व्यक्ति को अतिथि के निमित्त निकाले गये भोजन से खिलाया जा सकता है।

श्राद्ध के समय रुदन, क्रोध, असत्य और अन्न के अनादर के अतिरिक्त पाकादि में लोह-पात्र का निषेध है। श्राद्ध में निषेधित पुष्प मालती, चम्पा, नागकेशर, जवा, कनेर, कचनार केतकी व रक्त पुष्प है। भोजन में मृतात्मा की पसन्द को दृष्टि में रख कर पकवान (व्यंजन) बनाये जाते है, खीर, जलेबी, इमरती, मालपुआ, दही बड़े, कचौड़ी, पूड़ी आदि सूजी के लड्डू के साथ तुरई व ग्वार फली की सब्जी की प्रमुखता होती है। चूंकि श्राद्ध शरीर के नष्ट होने के बाद भी पुरखों से लेकर वर्तमान पीढ़ी को जोड़ने की वह कड़ी है जिसमें ब्रह्माण्ड के सूक्ष्म और स्थूल जगत के मध्य ऊर्जा और द्रव्यमान के वैज्ञानिक सिद्धान्त लागू होते हैं जिस गीता 3.10-16 में वर्णित किया गया है।

श्राद्ध के कर्ता को आसन पर पूर्वामुखी बैठकर बांई अनामिका तीन और दाहिनी अनामिका में 2 कुशाओं की , अग्रभाग सामने रखते हुए पवित्री धारण कर मन्त्रोचार से पाक व सामग्री को पवित्र करें..

ओउम् अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपिवा।
यः स्मरेत्पुण्यरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।

दृष्टि स्पर्शनदोषतः पाकादीनां पावेत्रास्तु।।

बाये हाथ में पीली सरसों ले निम्न मन्त्र पढ़े -

ओ३म् नमो नमस्ते गोविन्द पुराणपुरुषोत्तम।

इदं श्राद्धं हृषीकेश रक्षत्वं सर्वतो दिशः।।

तत्पश्चात दाहिने हाथ से पूर्व, दक्षिण, पश्चिम उत्तर, ऊपर और नीचे छोड़े ओ३म् प्राच्यै नमः, ओ३म् अवाच्यै नमः, ओ३म् प्रतीच्ये नमः, ओ३म् उदीच्यै नमः, ओ३म् अन्तरिक्षाय नमः, ओ३म् भूम्यै नमः

जौ और पुष्पों से भूम्यै नमः बोलते हुए तीन बार पृथ्वी का पूजन करें। गायत्री तथा निम्नांकित मन्त्र तीन बार जपें-

ओ३म् देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च।

नमः स्वधायै स्वाहाये नित्यमेव नमोनमः।।

(स्वधा एवं स्वाहा अग्नि की पत्नियाँ है इनके उच्चारण से अग्नि में हविष्य ग्रहण होता है)

इसके उपरान्त संकल्प किया जाता है हाथ में जल पुष्प और चावल से ओ३म् अद्य विक्रमसंवत्सरे (अमुक) संख्यके, (अमुक) मासे, (अमुक) पक्षे, (अमुक) तिथि, (अमुक) वासरे, (अमुक) गोत्रस्य, अस्मत् पितुः (अमुकनाम) (दादा का हो तो पितामहस्य, परदादा को प्रतिपामहस्य-इसी प्रकार माता, दादी परदादी के लिये बोलें) संकल्पित श्राद्ध कर्म च करिष्ये। तदङ्गत्वेन बलिवैश्य देवाख्यं - पंचबलि कर्म।

नमक रहित आहूतियाँ अग्निपात्र में 7, जलपात्र के समीप 2 और 20 मंडल में दी जाती है। पत्तों पर पाक सामग्री रोटी / पूड़ी पर थोड़ी-थोड़ी रख कर गाय, श्वान, काक, अतिथि, पिपिलिकादि बलि पलाश या किन्ही अन्द पत्तों पर (बेल पत्र निषेध) रखी जानी चाहिए। काक बलि भूमि पर रखते हैं। श्वान व काक बलि के अतिरिक्त अन्य गाय को खिला दिया जाना चाहिए। पूर्वजों के अधूरे कार्य व इच्छाओं का सम्मान करने पर वे प्रसन्न होकर हमारी इच्छाओं की पूर्ति एवं आशीर्वाद देते हैं। रोजगार न मिलने, व्यापार में लाभ न होने, विवाहादि में विलम्ब, संतति अभाव आदि कार्य में पितृदोष का होना माना जाता है।

इसके पश्चात् पितृ आसन दक्षिण में रख अपसव्य (यज्ञोपवीत बाँये कन्धे से उतार दायें कन्धे पर रख) दक्षिणामुख हो बायाँ घुटना मोड़ पितृलोक से आते उस पितर का ध्यान कर संकल्प कर आसन पर - सांकल्पित श्राद्धे इदं आसनं ते स्वधा बोल कर आसन पर गन्धं, पुष्प, ताम्बूल और वस्त्रादि रखें। पाकादि परोस कर आसन के सन्मुख रख जल से मण्डल करे, मन्त्र बोले ओउम् ''इदमन्नमेतद भूस्वामि पितृभ्यो नमः एवं ओ३म् पृथ्वी ते पात्रं छोरपिधानं ब्राह्मणस्य मुखे अमृते अमृतं जुहोमि स्वाहा। ओउम् इदं विष्णुविचक्रमे त्रेधा निदधेपदम। समूढमस्य पायं सुरे। ओ३म् कृष्णकव्यमिदंरक्षमदीयम'' पाक सामग्री का पृथक-पृथक स्पर्श करते हुए पाक रक्षा हेतु निम्न वाक्य से पात्र के बाहर तिल छोड़े।

ओ३म् अपहता असुरा रक्षा दंगसिवेरिषद।

पूर्वानुसार पाक का संकल्प करे - **इदंन्नं परिपिष्टं परिविष्यमाणं ब्राह्मण भोजनतृप्तिपर्यन्त् सोपकरणं ते स्वधा।**

सव्य (यज्ञोपवीत यथा स्थान कर) पूर्वाविमुख हो आशीर्वाद के लिए प्रार्थना करें-

ओ३म् गोत्रं नो वर्द्धतां दातारो नोऽभिवर्द्धताम्। वेदाः संन्ततिरेव च। श्रद्धा च नो मा व्यगमद्बहुदेयं च नोऽस्तु।। अन्नं च नो बहु भवेदतिथिं च लभेमहि। याचितारश्च नः सन्तु मा याचिष्म कञ्चन।। एताः सत्या आशिष सन्तु ।

पुनः अपसव्य व दक्षिणामुख हो वस्त्र पर ब्राह्मण का नाम ले दक्षिणा रखे।

फिर सव्य और पुर्वामुखी हो प्रार्थना करे

अन्नहीनंक्रियाहीनं विधिहीनं च यद्भवेत।
तत्सर्वमच्छिद्रमस्तु पित्रादीनां प्रसादतः।।

प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यतः।
स्मरणादेव तद्विष्णो सम्पूर्ण स्यादिति श्रुति।।

तब ब्राह्मण को आसन पर बैठा पाक का गुणवर्णन कर नम्रता पूर्वक बार बार परोसें। भोजन पश्चात तिलक कर दक्षिणा देकर आशीर्वाद लें।

वार्षिकी जिस दिन व्यक्ति की मृत्यु हुई हो उस श्राद्ध के दिन भी यही प्रक्रिया दोहरानी होती है।